

स्वामी विवेकानंद तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020

सरिता चौधरी*
सुमित गंगवार**

किसी भी राष्ट्र के विकास में शिक्षा की महती भूमिका होती है। भारत जैसे विविधतापूर्ण तथा बहुसांस्कृतिक देश में स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त शिक्षा में गुणात्मक परिवर्तन एवं परिमार्जन करने के लिए भारत सरकार द्वारा समय-समय पर विभिन्न आयोगों, समितियों तथा नीतियों का गठन एवं निर्माण किया गया। स्वतंत्र भारत में सर्वप्रथम डॉ. दौलत सिंह कोठारी की अध्यक्षता में वर्ष 1968 में राष्ट्रीय शिक्षा नीति प्रस्तावित की गई। इसमें शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण अभिवृद्धि के लिए कई महत्वपूर्ण सुझाव दिए गए। इसके बाद वर्ष 1986 में पुनः राष्ट्रीय शिक्षा नीति, तत्पश्चात् 1992 में संशोधित राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न सुझावों को प्रस्तावित किया गया। वर्ष 2020 में भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति को प्रस्तुत किया गया। इसमें अर्वाचीन भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्व को स्वीकार किया गया है। इसके साथ ही इसमें मानव निर्मात्री शिक्षा, शैक्षिक मूल्यों, मानकों, विश्वासों, आदर्शों तथा विचारों को केंद्र में रखते हुए शिक्षा व्यवस्था में गुणवत्तापूर्ण परिवर्तन करने हेतु अनेक सुझावों को प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में अर्वाचीन ज्ञान परंपरा की निहितता उच्च कोटि के दार्शनिक, योगी तथा महान शिक्षाशास्त्री स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन एवं कार्यों में प्रतिबिंबित होती है। इस लेख में *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में दिए गए सुझावों को स्वामी विवेकानंद के मानव निर्मात्री शिक्षा दर्शन के आलोक में अन्वेषित किया गया है। अन्वेषण इस ओर संकेत करता है कि *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के विभिन्न अध्यायों में वर्णित शिक्षा संबंधी सुझावों पर स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक दर्शन तथा शैक्षिक सिद्धांतों का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

भारत देश प्राचीन काल से ही महान विभूतियों की जन्मभूमि के रूप में प्रख्यात रहा है। भारत में जन्मे इन सभी महान व्यक्तित्वों ने अपने दार्शनिक, सामाजिक एवं शैक्षिक कृतित्व के द्वारा एक तरफ अज्ञानता से जकड़े समाज को न केवल ज्ञान रूपी प्रभा से अवलोकित किया है, साथ ही दूसरी तरफ

प्रगतिशील समाज के पुनर्गठन के साथ-साथ मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना में अद्वितीय भूमिका का निर्वहन किया है। इनके द्वारा सृजित ज्ञान, इनके चरित्र और आचरण तथा इनके द्वारा स्थापित सामाजिक आदर्शों एवं मूल्यों ने समय-समय पर भारतीय सभ्यता को श्रेष्ठता के उच्च सोपान तक ले जाने के

*पूर्व अतिथि अध्यापक, शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442001

**रिसर्च एसोसिएट, शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442001

लिए एक नवीन पथ भी प्रशस्त किया है। किसी भी समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने तथा चहुँमुखी विकास करने के लिए शिक्षा एक सशक्त हथियार है (लाल, आर. बी. 2013 तथा शर्मा, ओ.पी. 2008, 2013)। भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में रामकृष्ण परमहंस, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गांधी, अरबिंदो घोष, रविन्द्रनाथ टैगोर गिरिजाशंकर भगवानजी बधेका जैसे महान दार्शनिकों तथा शिक्षाशास्त्रियों ने अपने दार्शनिक तथा शैक्षिक विचारों से शिक्षा के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान दिया है। इन महान विभूतियों में अद्भुत तर्क क्षमता, महान योगी, बहुआयामी व्यक्तित्व, दार्शनिक, वैचारिक प्रखरता के धनी, महान चिंतक, समाजसेवी, आलौकिक गुणों से युक्त, आध्यात्मिकता से परिपूर्ण तथा शिक्षा के अग्रदूत स्वामी विवेकानंद भी शामिल हैं। स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी, 1863 (विद्वानों के अनुसार मकर संक्रांति संवत् 1920) कलकत्ता हाईकोर्ट के प्रसिद्ध वकील विश्वनाथ दत्त तथा भुवनेश्वरी देवी के घर हुआ था। इनका जन्मस्थल कलकत्ता (वर्तमान में कोलकाता) है। इनके बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ था। स्वामी विवेकानंद ने अपने परिवार को 25 वर्ष की अल्पायु में ही छोड़कर सन्यास ले लिया था। इन्होंने भारतीय जनमानस को अपनी भौतिक तथा सांस्कृतिक चेतना का ज्ञान कराते हुए निर्भीक होकर अपने कर्तव्य पथ पर अग्रसारित होने का मार्ग दिखाया। इसके साथ ही कुंठा एवं निराशा के दलदल में फँसी हुई भारतीय जनता को जीवन का नया पाठ पढ़ाया। स्वामी विवेकानंद के दार्शनिक विचारों पर यदि मनन किया जाए तो इनके ज्ञान संबंधी विचारों में वस्तुजगत और आत्म तत्व दोनों प्रकार के ज्ञान का समावेशन मिलता है। उनका दृढ़ विश्वास था

कि देश की भौतिक उन्नति और सामाजिक विकास उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि व्यक्ति और समाज की आध्यात्मिक उन्नति। स्वामी विवेकानंद का वेदांत दर्शन में अटूट विश्वास था। वे ईश्वर को सर्व शक्तिमान निराकार और एक मानते हैं तथा उसके अनंत ज्ञान, अनंत प्रेम और आनंद में विश्वास करते हैं (राज तथा सजवान, 2017)।

स्वामी विवेकानंद मनुष्य की महत्ता में बहुत विश्वास रखते हैं तथा उसे ईश्वर की एक सर्वोत्कृष्ट रचना के रूप में स्वीकार करते हैं। वे मनुष्य को एक पूर्ण मानव के रूप में देखते हैं और उसकी आध्यात्मिक प्रवृत्ति को जीवन मुक्ति का साधन मानते हैं। स्वामी विवेकानंद के विचारों में मानव सेवा को उच्च स्थान प्राप्त है। वे मानते हैं कि मानव सेवा से बढ़कर इस दुनिया में अन्य कोई धर्म नहीं है (लाल और पलोड़, 2012)। वे भूखे, दरिद्र तथा रोगी मनुष्य की सेवा को ईश्वर की सेवा का दर्जा देते हैं क्योंकि मानव में ही ईश्वर के दर्शन होते हैं और उसकी सेवा ब्रह्म सेवा है। स्वामी विवेकानंद के यह विचार उनके प्रेम, त्याग और विश्व बंधुत्व की भावना को प्रकट करते हैं (पाण्डेय, 2008)।

स्वामी विवेकानंद का आध्यात्मिकता में गहरा विश्वास है। वे आत्मानुभूति या मुक्ति या आत्म साक्षात्कार को जीवन का परम लक्ष्य मानते हैं। उन्होंने आध्यात्मिकता को हमारे पूर्वजों से चली आ रही अमूल्य विरासत के रूप में स्वीकार करते हुए राष्ट्रीय जीवन की रक्षा हेतु ठोस आधार माना है। धर्म के संबंध में स्वामी विवेकानंद के विचार उदार और समानतावादी हैं। वे संपूर्ण मानव जाति के हित को सर्वोपरि मानते हैं। उनके अनुसार धर्म के मूल लक्ष्य के विषय में सभी धर्म एक मत हैं। उनका कहना था

कि माना राष्ट्रों की भाषाएँ, परंपराएँ और जीवन शैली भिन्न हैं परंतु धर्म आत्मा से संबंधित है ना कि केवल भाषा और परंपरा से (रानी, 2015)। सभी धर्मों का मूल एक है और यह विभिन्न राष्ट्रों, परंपराओं, भाषाओं, मूल्यों तथा विश्वासों के माध्यम से प्रकट होता है। अतः स्पष्ट है कि संसार के सभी धर्म सुंदर और महत्वपूर्ण हैं, उनका मूलाधार एकता का भाव ही है।

स्वामी विवेकानंद ने अपने दार्शनिक विचारों में सत्यता, अहिंसा, स्वतंत्रता, त्याग तथा निर्भीकता को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। वे हृदय की शुद्धता तथा सत्यता को आवश्यक मानते हैं। वे मनुष्य को वीर उद्यमी निर्भीक और स्वतंत्र विचारों वाला बनने पर जोर देते हैं। उनके अनुसार त्याग का अर्थ है — निःस्वार्थ कार्य करना। वे कहते हैं कि त्याग जीवन का एक उच्च गुण है। त्याग के बिना कोई सिद्धि संभव नहीं है और त्याग ही मानवीय चेतना का पवित्रतम और सर्वोत्तम साध्य है।

स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दर्शन

स्वामी विवेकानंद अपने समय की प्रचलित अंग्रेजी शिक्षा के विरोधी थे। उन्होंने उस प्रचलित शिक्षा को ‘निषेधात्मक शिक्षा’ की संज्ञा देते हुए कहा कि यह मनुष्य को मशीन बनाकर लिपिकों का निर्माण कर रही है और इससे बच्चे रट-रट कर तोता बन रहे हैं। स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा का अर्थ मात्र सूचना नहीं है, अपितु ऐसे विचारों की अनुभूति है जो जीवन निर्माण में सहायक हैं। केवल कुछ परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर लेना और अच्छे भाषण देना ही शिक्षित होने का प्रमाण नहीं है, अपितु वास्तविक शिक्षा मनुष्य का पूर्ण निर्माण करती है, ऐसा मनुष्य जो उद्यमशील हो, साहसी हो, सच्चरित्र हो तथा समाज सेवा और राष्ट्रप्रेम की भावना से युक्त हो (राठौड़, 2012)।

स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा के उद्देश्यों में मानव विकास के सभी पक्षों पर अपना ध्यान केंद्रित किया है। उन्होंने सैद्धांतिक शिक्षा के स्थान पर व्यावहारिक शिक्षा पर बल दिया है। इसके साथ ही शिक्षा को प्रत्येक समस्या का निदान बताया है। विवेकानंद ने शिक्षा को व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र की प्रगति के लिए आवश्यक माना है। शिक्षा के उद्देश्यों का विवेचन करते हुए उन्होंने बालक के शारीरिक, मानसिक और चारित्रिक विकास पर बल दिया है। बालक की जन्मजात शक्तियों में विश्वास करना व अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही सच्ची शिक्षा है (झरे, 2016)। शिक्षा के उद्देश्यों पर चिंतन करते हुए स्वामी विवेकानंद ने राष्ट्रहित के साथ-साथ विश्व कल्याण संबंधी विचारों को तरजीह दी है। स्वामी विवेकानंद ने कहा है कि शिक्षा के माध्यम से ही मनुष्य में चेतना और विश्व बंधुत्व की भावना का विकास किया जा सकता है। जिससे हमें विश्व के प्रति कुछ करने का अवसर प्राप्त हो सके। वे देश की प्रगति हेतु तकनीकी व वैज्ञानिक शिक्षा के पक्षधर भी थे। उनके अनुसार विज्ञान व तकनीकी शिक्षा से बालक में व्यावसायिक दक्षता का विकास होता है जिससे वह आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बन सकता है (पाण्डेय, 2008)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विवेकानंद के सर्वांगीण विकास संबंधी विचारों का समावेशन
राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुच्छेद 11 में वर्णित विभिन्न पदों में समग्र तथा बहु-विषयक शिक्षा की चर्चा की गई है, जिसका उद्देश्य मनुष्य की सभी क्षमताओं यथा बौद्धिक, सामाजिक, शारीरिक, भावात्मक तथा नैतिक पक्ष को एकीकृत तरीके से विकसित करना है। यह प्रावधान स्वामी विवेकानंद द्वारा प्रदत्त ‘मानव

निर्मात्री शिक्षा' के प्रमुख उद्देश्य से प्रभावित है कि शिक्षा मनुष्य की अंतर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है, जिसके द्वारा चरित्र का निर्माण होता है, मस्तिष्क की शक्ति बढ़ती है, बुद्धि का विकास होता है तथा मनुष्य अपने पैरों पर खड़ा होता है। यह उद्देश्य इस अंतर्निहिता को पूर्णता प्रदान करने का प्रयास है (प्रेमी, एम. के., 2012)।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विवेकानंद के कौशलों तथा मूल्यों के एकीकरण संबंधी विचारों का समावेशन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का अनुच्छेद 4, भी विद्यार्थियों के समग्र विकास की बात करता है, जो विशेष कौशलों तथा मूल्यों के एकीकरण के प्रावधान प्रस्तुत करता है। इसके साथ ही यह आलोचनात्मक चिंतन और खोज आधारित, चर्चा आधारित तथा विश्लेषण आधारित अधिगम पर ध्यान देने को प्राथमिकता देता है, जो कि विवेकानंद के शिक्षा के उद्देश्य जिसमें उन्होंने कहा था कि शिक्षा का उद्देश्य मानसिक वीर्य को बढ़ाना तथा बुद्धि का विकास करना है, क्योंकि बुद्धि ही व्यक्ति की सबसे बड़ी विशेषता है, बुद्धि से ही ज्ञान और ज्ञान से भक्ति तथा योग संभव है (दहिया, 2017)। विवेकानंद अद्वैत वेदांत को सार्वभौमिक विज्ञान धर्म कहते थे तथा उनका मानना था कि कला, विज्ञान और धर्म, एक ही परम सत्य को व्यक्त करने के तीन विभिन्न साधन हैं और यही बात अद्वैत वेदांत कहता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्वामी विवेकानंद के व्यावहारिक शिक्षा संबंधी विचारों का समावेशन विवेकानंद, सैद्धांतिक शिक्षा के स्थान पर व्यावहारिक शिक्षा पर बल देते हुए सुझाव देते हैं कि तुमको कार्य के सभी क्षेत्रों में व्यावहारिक बनना पड़ेगा। इसी लक्ष्य की ओर इंगित करते हुए **राष्ट्रीय शिक्षा नीति**

2020 के अनुच्छेद 4.6 में प्रायोगिक या व्यावहारिक अधिगम के संबंध में विचार प्रस्तुत किए गए हैं, जिसमें कहा गया है कि सभी चरणों में प्रयोग आधारित अधिगम को अपनाया जाएगा। जिससे विद्यार्थी अन्य चीजों के अलावा स्वयं करके भी सीखेंगे तथा कला एवं खेल को एकीकृत करने के विचार भी दिए गए हैं। **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विवेकानंद के शारीरिक शिक्षा संबंधी विचारों का समावेशन** स्वामी विवेकानंद ने शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति का शारीरिक विकास करना बताया है। वे भौतिक जीवन की रक्षा तथा आध्यात्मिकता की अनुभूति करने के लिए शरीर के महत्व को स्वीकार करते हैं। इसलिए शिक्षा के द्वारा व्यक्ति का शारीरिक विकास करना चाहते हैं (राठौड़, 2012)। स्वामी विवेकानंद का मानना है कि आज हमारे देश को जिस चीज की आवश्यकता है, वह है लोहे की मांसपेशियाँ और फौलाद के स्नायु, प्रचंड इच्छाशक्ति जो सृष्टि के गुप्त तथ्यों और रहस्यों को भेद सकें और जिस उपाय से भी हो अपने उद्देश्यों की पूर्ति करने में सक्षम हो। इसी लक्ष्य की पूर्ति हेतु **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** के अनुच्छेद 4.8 में खेल समन्वय द्वारा शैक्षिक विकास के प्रावधानों को प्रस्तुत किया गया है। इसके तहत स्थानीय खेलों सहित विभिन्न शारीरिक गतिविधियों का शिक्षण प्रक्रिया में उपयोग किया जाना है। ऐसा करने से परस्पर सहयोग, स्वतः पहल करने, स्वतः निर्देशित होकर कार्य करने में अनुशासन, समूह भावना, जिम्मेदार नागरिकता जैसे कौशल विकसित हो सकेंगे, ताकि फ़िट इंडिया मूवमेंट में परिकल्पित किए गए फ़िटनेस के स्तर के साथ संबंधित जीवन कौशल प्राप्त करने में सहायता मिल सके। पाठ्यक्रम के संबंध में स्वामी विवेकानंद ने व्यापक

सुझाव दिए हैं तथा विस्तृत एवं लचीले पाठ्यक्रम के महत्व का वर्णन किया है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के अनुच्छेद 4.9 में विद्यार्थियों को अध्ययन करने के लिए अधिक लचीलापन तथा पाठ्यक्रम के चुनाव में विभिन्न अवसरों की बात की गई है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्वामी विवेकानंद के मातृभाषा संबंधी विचारों का समावेशन

स्वामी विवेकानंद निषेधात्मक शिक्षा के विरोधी रहे हैं जोकि मातृभाषा का प्रयोग न करने तथा मौलिकता का प्रदर्शन न करने पर बल देती है। इसी संबंध में *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में अनुच्छेद 4.11 में स्पष्ट रूप से उल्लेखित किया गया है कि छोटे बच्चे अपने घर की भाषा या मातृभाषा में सार्थक अवधारणाओं को अधिक तेजी से सीखते हैं। इसी संबंध में *राष्ट्रीय शिक्षा नीति* के अनुच्छेद 4.14 में विज्ञान तथा गणित जैसे विषयों में द्विभाषी पाठ्यपुस्तकों तथा शिक्षण-अधिगम सामग्री को तैयार करने का प्रावधान किया गया है। अनुच्छेद 22.4 भी विभिन्न भारतीय भाषाओं के संरक्षण व संवर्धन की बात करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्वामी विवेकानंद के राष्ट्रीय एकता एवं विश्व बंधुत्व संबंधी विचारों का समावेशन

स्वामी विवेकानंद ने व्यक्ति में राष्ट्रीय एकता, विश्व चेतना तथा विश्व बंधुत्व के गुणों का विकास करना, शिक्षा के प्रमुख उद्देश्य के रूप में स्पष्ट किया है। स्वामी विवेकानंद का मानना है कि 'शिक्षा के द्वारा हमें यह बोध होना चाहिए कि राष्ट्र तथा विश्व के प्रति हमारा बड़ा कर्तव्य है। हम उसके ऋणी है, वह हमारा ऋणी नहीं है।' *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के अनुच्छेद 12.7 में शैक्षिक गुणवत्ता

के वैश्विक मानकों को प्राप्त करने तथा शिक्षा के अंतर्राष्ट्रीयकरण के संबंध में स्पष्ट सुझाव प्रस्तुत किए गए हैं जिससे विश्वगुरु के रूप में हमें अपनी भूमिका को बहाल करने में मदद मिलेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में स्वामी विवेकानंद के व्यावसायिक शिक्षा संबंधी विचारों का समावेशन

स्वामी विवेकानंद ने व्यावसायिक क्षमता के विकास करने संबंधी विचार प्रस्तुत किए हैं ताकि बच्चे स्वावलंबी तथा आत्मनिर्भर बन सकें। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* के अनुच्छेद 16.5 में 2025 तक स्कूल तथा उच्चतर शिक्षा प्रणाली के माध्यम से कम-से-कम 50 प्रतिशत विद्यार्थियों को व्यावसायिक शिक्षा का अनुभव दिए जाने की बात कही गई है।

उपसंहार

निश्चित रूप से स्वामी विवेकानंद समकालीन भारत के पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने भारत की आध्यात्मिक श्रेष्ठता और पाश्चात्य देशों की भौतिक श्रेष्ठता से परिचित कराया। इन्होंने अपने दार्शनिक एवं शैक्षिक विचारों को मूर्तरूप देने के लिए रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। उन्होंने देश-विदेश में इसकी शाखाएँ खोलीं और उनके द्वारा जन सेवा एवं जन शिक्षा की व्यवस्था की। इन्होंने देश के निर्बल एवं उपेक्षित व्यक्तियों के सर्वांगीण विकास पर विशेष रूप से ध्यान दिया। कुल मिलाकर उनके शैक्षिक विचार भारतीय धर्म एवं दर्शन पर आधारित हैं। इसके साथ ही ये भारतीय जन जीवन के अनुकूल हैं, जिसके परिणामस्वरूप अंत में यह कहा जा सकता है कि *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*, स्वामी विवेकानंद के संपूर्ण शैक्षिक विचारों को

अपने आप में समेटे हुए है। यह शिक्षा नीति उनके ज्ञान-विज्ञान एवं सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित करने का बल देती है।

संदर्भ

- कुमार, बी. 2010. स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक चिंतन की प्रासंगिकता. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. 30 (3), 45–50.
- झरे, पी. 2016. वर्तमान शिक्षा समस्याओं में स्वामी विवेकानंद का शिक्षा दर्शन. *देव संस्कृति इंटरडिसीप्लिनरी इंटरनेशनल जर्नल*. 8. 47–50.
- दहिया, जी. 2017. स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक एवं सामाजिक चिंतन की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एकेडमिक रिसर्च एंड डेवलपमेंट*. 2 (6). 1219–1222.
- पाण्डेय, आर. 2008. *विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्री*. अग्रवाल पब्लिकेशन. आगरा.
- प्रेमी, एम. के. 2012. शिक्षा एवं धर्म के सन्दर्भ में स्वामी विवेकानंद का दर्शन — एक दर्शनशास्त्रीय विवेचन. *रिसर्च जर्नल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंस*. 3 (3). 381–385.
- मानव संसाधन विकास मंत्रालय. 1986. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नयी दिल्ली.
- . 2019. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति (प्रारूप)*. मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार नयी दिल्ली.
- मिश्र, एस. के. 2012. *भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास*. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.
- राठौड़, के. 2012. *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक*. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.
- राज, ए. और सजवान, डी. 2017. स्वामी विवेकानंद का मानव निर्माणकारी शैक्षिक दृष्टिकोण. *इंटरनेशनल एजुकेशन एंड रिसर्च जर्नल*. 3 (5). 287–289.
- रानी, के. 2015. स्वामी विवेकानंद एवं महात्मा गांधी के शैक्षिक दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन. *रिव्यू ऑफ़ रिसर्च*. 4 (8). 1–5.
- लाल, आर. बी. 2013. *शिक्षा के दार्शनिक तथा सामाजिक आधार*. रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ.
- लाल, आर. बी. और पलोड, एस. 2012. *शैक्षिक चिंतन एवं प्रयोग — उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक*. आर. लाल बुक डिपो, मेरठ.
- शर्मा, ओ. पी. 2008. *शिक्षा के दार्शनिक आधार*. विनोद पुस्तक मंदिर आगरा.